International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

बज्जिका के संस्कार गीतों का सांगीतिक अध्ययन

डॉ0 सुरभि
एम.ए., पीएच.डी. (संगीत)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

संस्कार गीतों का संबंध सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों से है। मानव–ज्ञान के साथ ही इसका प्रारंभ हो गया होगा जो सभ्यता और संस्कृति के साथ धीरे–धीरे परिवर्तित होकर वर्तमान रूप में हमारे सामने है। जहां तक हिन्दू संस्कार गीतों का प्रश्न है तो इनका उल्लेख हमारे सभी प्राचीन धर्म ग्रंथों जैसे वेद, पुराण, ब्राह्मण ग्रंथों में उल्लेखित हैं। अतः इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमारा समाज इसका महत्व बहुत पहले ही स्वीकार कर लिया था।

भारतीय जीवन में इन संस्कार गीतों का बहुत महत्व है। संस्कार एक ओर जहां मानव एवं आध्यात्मिक शक्तियों के बीच माध्यम के रूप में काम देते हैं वहीं दूसरी ओर सामाजिक तत्वों से संबंध स्थापित करने में सहायक होते हैं। संस्कारों के माध्यम से प्राचीन समाज के आदर्शों एवं महत्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्ति मिलती है। इस प्रकार संस्कार का उद्देश्य व्यक्तित्व के विकास द्वारा मानव कल्याण एवं समाज तथा विश्व की दृश्य और अदृश्य शक्तियों से उसका सामंजस्य स्थापित करना हो गया।

वेदों में संस्कारों का उल्लेख मिलता है। वैदिक साहित्य में ब्राह्मचर्य विवाह एवं अंत्येष्टि संस्कारों के वर्णन मिलते हैं। गृहसूत्र में विवाह, गर्भाधान, जातक कर्म आदि संस्कारों का विशेष रूप से विधान मिलता है। धर्म सूत्रों में इसका विस्तृत विवेचन है। धर्मसूत्रों में इसका विस्तृत विवेचन मिलता है। इसके बाद मनु, याज्ञवल्क्य आदि के स्मृति ग्रन्थों में संस्कारों का विस्तृत एवं सामाजिक दृष्टि से महत्व प्रतिपादन मिलता है।

स्मृति ग्रन्थों में इन संस्कारों की अपरिहार्यता थी। इन संस्कारों में कई विधियां (जन्म, विवाह, मृत्यु संबंधी) संगीत में लय और ध्वनि के समान मानव जीवन में प्रवाहित होने लगी थी। जीवन के विभिन्न अवसरों पर उनकी पुनरावृत्ति आवश्यक थी। इससे व्यक्ति की भावना उद्बुद्ध होती थी और उसके तथा अवसर विशेष के बीच इस प्रकार का रहस्यमय संबंध स्थापित हो जाता था।

आखलायन गृहसूत्रों में 11 संस्कारों, याज्ञवल्कभ्य में बारह संस्कारों का उल्लेख हुआ है। पर व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का निरूपण किया गया है। जिन्हें आगे चलकर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी स्वीकार किया है। सर सागर आदि ग्रन्थों में भी सोलह संस्कारों का ही

स्वीकारात्मक उल्लेख मिलता है। पर व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का निरूपण किया गया है, जिन्हें आगे चलकर आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी स्वीकार किया है। सूर सागर आदि ग्रन्थों में भी सोलह संस्कारों का ही स्वीकारात्मक उल्लेख मिलता है।

मुख्य रूप से संस्कारों के दो वर्ग किये जा सकते हैं–

1. शास्त्रीय
2. लौकिक

शास्त्रीयः

संस्कारां के शास्त्रीय रूप के अंतर्गत अनेक विधान अब वर्तमान नहीं हैं। जातक में संस्कारों के रूप में अब बहुत सारी विकृतियां आ गयी है। अन्य प्रासन्न संस्कार अब कहीं–कहीं कुछ रूपान्तों के साथ प्रचलित है। चूहा कर्म या मुंडन प्रथम, तृतीया या पंचम वर्ष, कहीं अलग और कहीं उपनयन के साथ ही संपन्न कर दिया जाता है। यद्यपि प्राचीन शास्त्रीय संस्कारों का बहुत कुछ ह्रास हो गया है और उनमें कई लोक तत्वों का समावेश हो गया है, तथापि उनकी विधिया शास्त्रविहित मंत्रों के साथ पुरोहित द्वारा ही संपन्न की जाती है। पुरोहित द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले सारे अनुष्ठानों के साथ मंत्रों का उच्चारण आवश्यक माना जाता है। शास्त्रीय संस्कारों में पुरूष पक्ष की प्रधानता होती है।

लौकिकः

लौकिक संस्कार शास्त्रीय संस्कार से कहीं व्यापक एवं प्रभावशाली है। इसका आधार न प्राचीन धर्मग्रंथ है न ही इसमें पुरोहित की कोई भूमिका होती है। इसका संपादन मुख्य रूप से स्त्रियां ही सम्पन्न करती है। स्त्रियों द्वारा सम्पन्न विधि विधान शास्त्रीय विधान से कहीं अधिक जटिल है। रमणियों द्वारा इन विधि विधानों के साथ–साथ अनेक गीत गाये जाते हैं।

मृत्यु संबंधी संस्कार गीतों को छोड़कर सभी संस्कार गीत काफी उमंग और उल्लास से गाए जाते हैं। धर्मग्रंथों में उल्लिखित 16 संस्कारों में जन्म, विवाह और मृत्यु को ही प्रधानता दी गयी है। इन तीनों संस्कारों का संबंध मानव जीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। इसमें जन्म और विवाह उमंग और उल्लास के प्रतीक हैं जबकि मृत्यु शोक और दुःख के।

इन तीनों संस्कारों में जन्म और विवाह का संबंध सृष्टि के विकास से संबंधित है इसलिए इनके गीतों की संख्या भी बहुत अधिक है। मृत्यु संबंधी गीत बहुत कम मिलते हैं और यह किसी विशेष वर्ग में ही प्रचलित है।

संस्कार जीवन के विभिन्न अवसरों को महत्व एवं पवित्रता प्रदान करते हैं। वे इस बात पर जोर डालते हैं कि जीवन के विकास का प्रत्येक चरण केवल शारीरिक किया ही नहीं है। इसका संबंध मनुष्य की बुद्धि भावना और उसकी

आम्कि अभिव्यक्ति है। इसकी उपेक्षा किसी तरह भी नहीं की जा सकती है। संस्कारों के अभाव में जीवन की घटनाएं, शरीर की दैनिक आवश्यकताओं और आर्थिक व्यापारों के समान अनाकर्षक, चमत्कारहीन और जीवन के भावुक संगीत से रहित हो जाती है।

आधुनिक युग में चूड़ा कर्म, अन्य प्राशन आदि के प्रति जो धार्मिक भाव किसी समय लोक में बना था, वह अनुष्ठानों में भी अभी भी सुरक्षित है। किन्तु बदलती हुई परिस्थितियों में लोक उससे भावात्मक तादाम्य नहीं अनुभव कर सकते। यह बात जनेऊ के संबंध में भी कही जा सकती है। किसी समय उपनयन करने से व्यक्ति द्विज कहलाने का अधिकार प्राप्त करता था किन्तु धीरे–धीरे विशेषाधिकार स्वयं महत्वहीन हो गया। इसी प्रकार बहुत से संस्कार कभी व्यक्तित्व के निर्माण और विकास की दृष्टि से प्रयोजनीय थे।

मृत्यु संस्कारं संबंधी गीत

भारतीय धर्मशास्त्रों में वर्णित 16 संस्कारों में मृत्यु संस्कार भी है जो मानव जीवन का सबसे अंतिम संस्कार है। संसार की सभी सभ्य असभ्य जातियों में किसी न किसी रूप में यह संस्कार अवश्य होता है। मनुष्य शरीर से संबंधित यह अंतिम संस्कार है।

संदर्भ सूची :

1. अंजुरी, संपादक प्रो0 सत्यनारायण प्रसाद, प्रकाशक बिहार राज्य बज्जिका विकास परिषद् सोसायटी 2011।
2. जय बज्जिका आंदोलन क्यों, प्रो. हरेंद्र प्रसाद सिंह विप्लव, वैशाली बज्जिका प्रकाशन, लालगंज, द्वितीय संस्करण, 1991.
3. बज्जिका रामाएन, डॉ0 अवधेश्वर अरूण वर्ष 2003, अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन चेन्नै शाख द्वारा प्रकाशित।
4. मरइया के इजोर, डॉ0 रामबिलास (काव्य संग्रह), संस्करण अगहन विवाह पंचमी, 2008, स्वास्तिक प्रकाशन, मुजफ्फरपुर।
5. जनमानस (काव्य संग्रह), डॉ0 गंगा प्रसाद आजाद सतपलपुरी, संस्करण 2007, प्रमोद प्रिटिंग प्रेस, समस्तीपुर
6. बज्जिका केसरी (पत्रिका मासिक), प्रधान संपादक–अवधेश्वर अरूण, वर्ष 1998, प्रकाशन–बज्जिका जन जागरण मंच
7. कच देवयानी, प्रो. हरेंन्द्र विप्लव, वैशाली बज्जिका प्रकाशन, वैशाली प्रथम संस्करण 1986.